
श्री गुरुभ्यो नमः

नमः सोमाय च
—

सोमाय
=====

१) केवल वर्णक्रमः

'स' कार 'ओ' कार, 'म' कार 'आ' कार. 'य' कार, 'अ' काराः – सोमाय ।

२) स्वर वर्णक्रमः

- सकारोदात्त 'ओ'कार, 'म' काराल्पतरप्रयत्न तैरोव्यञ्चन स्वरित 'आ' कार,
- 'य' कार प्रचय 'अ' काराः – सोमाय ।

३) मात्रा वर्णक्रमः

- अर्द्धमात्रिक 'स' कार, द्विमात्रिकोदात्त 'ओ' कार अणुमात्रिक विराम,
अर्द्धमात्रिक 'म' कार, द्विमात्रिकाल्पतर प्रयत्न तैरोव्यञ्चन स्वरित 'आ' कार अणुमात्रिक विराम,
 - अर्द्धमात्रिक 'य' कार, एकमात्रिक प्रचय "अ" कार द्विमात्रिक विरामाः
– सोमाय ।
-

४) अङ्ग वर्णक्रमः

- अर्द्धमात्रिक पराङ्गभूत 'स' कार,
- द्विमात्रिकोदात्त 'ओ' कार अणुमात्रिक विराम, अर्द्धमात्रिक पराङ्गभूत 'म' कार,
- एकमात्रिकाल्पतरप्रयत्न तैरोव्यञ्चन स्वरित "आ" कार अणुमात्रिक विराम, अर्द्धमात्रिक पराङ्गभूत 'य' कार,
- एकमात्रिक प्रचय "अ" कारः ,
- द्विमात्रिक विरामाः – सोमाय ।

५) सर्वसारभूत वर्णक्रमः

- विवृतकण्ठोत्तित विवार अघोष महाप्राणाख्य बाह्यप्रयत्न विशिष्टश्वास ध्वनिजनित,
 - उत्तरदन्तमूलाधोभाग स्थान विवृत मध्यजिह्वाग्र करण विवृतप्रयत्नार्द्धमात्रिक पराङ्गभूत,
 - भूमिदेवताक शूद्रजातिक "स" कार, (for "स्" in "सो")
 - सम्बृतकण्ठोत्तित सम्वाराख्य बाह्यप्रयत्न सहित नादध्वनि जनित,
 - अतिव्यस्थ कल्पहनु सहित दीर्घोन्नतोप सम्बृतोत्तरोष्ठ स्थान धीर्घोन्नतोप सम्बृताधरोष्ठक विवृत प्रयत्न द्विमात्रिक,
 - भूमिदेवताक ब्राह्मणजातिक सत्वगुण सहित तर्जन्यङ्गुलि मध्यरेखान्यास योग्य, शरीरायाम श्लष्मीकृत गलविलविनिस्स्रित परुषध्वनिकाजारुत तुल्य गान्धरस्वर हेतु भूत,
 - मूर्धस्थान उत्पन्नोदात्त स्वरगुणक,
 - भूमिदेवताक ब्राह्मण जात्योकार अणुमात्रिक विराम, (for "ओ" in "सो")
-

-
- सम्बृतकण्ठोथित सम्वाराख्य घोष अल्पप्राणाख्य बाह्यप्रयत्न सहित नादध्वनिजनित,
 - विवृत नासिकोत्तरोष्ठ स्थानाधरोष्ठ-करण-स्पृष्ट प्रयत्नार्धमात्रिक पराङ्गभूत,
 - सूर्यदेवताक वैश्यजातिक "म"कार, (for "म्" in "मा")

- सम्बृतकण्ठोथित सम्वाराख्य बाह्यप्रयत्न सहित नादध्वनिजनित,
- अतिव्यस्त कल्पहनुस्थान तथा भूतौष्ठकरण विवृतप्रयत्न द्विमात्रिक, (for "आ" in "मा")

- चन्द्रदेवताक वैश्यजाति रजोगुण सहित अनामिकाङ्गुल्यन्तरेखा न्यासयोग्य, उच्चैष्ट्व नीचैष्ट्व धर्मद्वय समाहतिजनित तदाश्रय विजातीय,
- हयह्येहा तुल्य धैवतस्वर हेतुभुत कर्णमूलस्थानोत्पन्न अल्पतर प्रयत्न तैरोव्यञ्चन स्वरित स्वरगुणक,
- वायुदेवताक ब्राह्मण जात्याकार,
- अणुमात्रिक विराम (for swaritam in सोमाय)

- सम्बृत कण्ठोथित सम्वार घोष अल्पप्राणाह्य बाह्यप्रयत्न सहित
 - नादध्वनि जनित,
 - तालुस्थान जिह्वा मध्य पार्श्वभाग करण ईष स्पृष्ट- प्रयत्न अर्धमात्रिक पराङ्ग भुत,
 - वायुदेवताक वैश्यजातिक "य" कार, (for "य्" in "य")
-

-
- संवृत कण्ठोथित संवाराख्य बाह्यप्रयत्न सहित नादध्वनि जनित.
अत्युपसंहत कल्प हनुस्थान तथाभूतौष्ठ करणसंवृत प्रयत्न एक मात्रिक,
 - सूर्य देवताक शूद्रजाति तमोगुण सहित मध्यमाङ्गुलि मध्य रेखा
न्यासयोग, उच्चकल्प तद्विलक्षण क्रौञ्च क्वण तुल्य मध्यम स्वरहेतु
भूत,
 - सर्वाङ्ग स्थानोत्पन्न प्रचय स्वर गुणक,
 - वायुदेवताक ब्राह्मण जात्यकार, द्विमात्रिक विरामाः ।

।
सोमाय ।

हरिः ओं

vedavms team
dated: 1st May 2025
Mumbai

=== शुभं ===
